For B.A. [Part-I]

Question :- मनोविज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों का वर्णन करें

Ans :-

मनोविज्ञान का मुख्य उद्देश्य मनुष्य की अनुभूतियों तथा व्यवहारों का उचित अध्ययन कर उन्हें सही रूप में समझना और उनका नियंत्रण करना है। इस तरह यह स्पष्ट है कि मनोविज्ञान की सहायता से हम मनुष्यों के बारे में सही-सही ज्ञान प्राप्त कर न सिर्फ दूसरों को ही समझने की कोशिश करते हैं, बल्कि अपने-आपको भी समझने में समर्थ होते हैं। अर्थात मनोविज्ञान की सहायता से हमें आत्मज्ञान (self knowledge) एवं दूसरों के बारे में ज्ञान (knowledge about others) प्राप्त होता है, जिससे हम अपने और दूसरों के व्यवहारों का आवश्यकतानुसार नियंत्रण करने में समर्थ होते हैं। इस नियंत्रण के फलस्वरूप हमें वातावरण की जटिल परिस्थितियों से अनुकूल अभियोजन (adjustment) स्थापित करने में पर्याप्त मदद मिलती है, जिससे व्यक्ति का जीवन सुखी हो जाता है।

मनोविज्ञान अपने उपर्युक्त उद्देश्य को प्राप्त करने हेतु मानव के व्यवहारों से संबंधित समस्याओं एवं तथ्यों की खोज करने की दिशा में अग्रसर है तथा इस दिशा में मनोवैज्ञानिक अनुसंधान का क्षेत्र दिनोदिन बढ़ता जा रहा है। जीवन के विविध पक्षों की मनोवैज्ञानिक खोज हो रही है, और व्यक्तिगत अभियोजन (personal adjustment) से लेकर सार्वभौम अभियोजन (Universal adjustment) तक के विभिन्न तथ्यों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करना इसका विषय बन गया है। इसी पृष्ठभूमि में मनोविज्ञान के कुछ प्रमुख क्षेत्रों का निम्नलिखित रूप में वर्णन किया जा सकता है :-

1. सफल अभियोजन (Successful adjustment) :-

मनोविज्ञान का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र मानव-जीवन के सफल अभियोजन से सम्बद्ध तथ्यों का अध्ययन

करने से है। मनोवैज्ञानिक अध्ययनों के द्वारा हमें व्यक्ति के पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं जीवन के अन्य क्षेत्रों में सफलतापूर्वक अभियोजन करने से सम्बद्ध ज्ञान की वृद्धि करने में सहायता मिलती है तथा इस तरह से प्राप्त ज्ञान के आधार पर मनुष्य अपने को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अभियोजित करने में समर्थ होता है। मनोवैज्ञानिक अध्ययनों का ही यह परिणाम है कि आज हम व्यक्ति के व्यक्तिगत एवं सामाजिक अभियोजन में होनेवाली कठिनाइयों एवं उनके निराकरण के उपायों के बारे में जान पाये हैं तथा इनका उपयोग कर मानव-जीवन को अभियोजन योग्य बनाने में समर्थ हुए हैं। इस क्षेत्र में किये गये अध्ययनों से प्राप्त ज्ञान का भंडार इतना विशाल हो गया है कि इनके आधार पर आजकल मनोविज्ञान की अलग शाखाएँ विकसित हो चुकी हैं, जिन्हें क्रमशः असामान्य मनोविज्ञान (Abnormal Psychology) एवं समाज मनोविज्ञान (Social Psychology) कहते हैं।

असामान्य मनोविज्ञान के अन्तर्गत असमान्यता के स्वरूप, कारण एवं उपचार के उपायों का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार व्यक्ति के अभियोजन-सम्बंधी कठिनाइयों का वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन कर उन्हें पुनः अभियोजन के योग्य बनाया जाना संभव हो सका है।

समाज मनोविज्ञान द्वारा व्यक्ति के सामाजिक अनुभवों एवं व्यवहारों का विश्लेषण किया जाता है तथा व्यक्ति को अच्छा नागरिक बनाने और उसके पारस्परिक सम्बन्धों को अनुकूल बनाने का प्रयास किया जाता है। इस क्रम में मनोवैज्ञानिक व्यक्ति और व्यक्ति के बीच के संबंधों का वैज्ञानिक अध्ययन करते हैं।

2. विकासात्मक अध्ययन में :-

मनोविज्ञान का एक और महत्वपूर्ण क्षेत्र 'बालकों' के विकासात्मक पहलुओं का अध्ययन करने से है। मनोवैज्ञानिक अध्ययनों की मदद से हम बालकों के विकास में उत्पन्न कठिनाइयों या समस्याओं के कारणों का पता लगाते हैं तथा उचित विकास का मार्गदर्शन भी करते हैं। मनोवैज्ञानिक